[Shukla., Vol.3 (Iss.3): March, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i3.2015.6315

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

TRIPURI CONGRESS AND SUBHASH CHANDRA BOSE
त्रिपुरी कांग्रेस और सुभाष चंद्र बोस

Dr. Pradeep Shukla [*1]
[*1] Professor, History Department Guru Ghasidas University, Bilaspur, India

ABSTRACT

In December 1936, in the Faizpur session, Congress entered the rural areas. In 1938, under the leadership of Subhash Bose, Congress was busy in contact with the masses in Haripur. The work of the Congress ministries in six provinces of India was also examined with the same model, which had already spent seven months in work. During his tenure, he organized the National Planning Committee and made Jawaharlal Nehru its president. His policy was of large-scale industrialization. He was against the compromise with Britain and wanted to strengthen this opposition. This caused trouble in Gandhian areas. People in his favor were thinking of making a compromise with the British government.

शोध सारांश

दिसम्बर 1936, फैजपुर के अधिवेशन में कांग्रेस ने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश किया था। सन् 1938 में सुभाष बोस के नेतृत्व में हरिपुरा में कांग्रेस जनमानस के सम्पर्क में व्यस्त रही। भारत के छः प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों के कार्यों का परीक्षण भी इसी प्रतिमान से किया गया जिन्हे कार्य करते हुए सात माह व्यतीत हो चुके थे। अपने कार्यावधि में उन्होंने राष्ट्रीय योजना समिति का संगठन किया और जवाहरलाल नेहरू को इसका अध्यक्ष बनाया। उनकी नीति बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण की थी। वह ब्रिटेन के साथ समझौत के विरोधी थे और इस विरोध को मजबूत करना चाहते थे। गांधीवादी क्षेत्रों में इससे परेशानी हुई। उनके पक्ष में लोग ब्रिटिश सरकार से समझौता करने की बात सोच रहे थे।

Cite This Article: Dr. Pradeep Shukla, "TRIPURI CONGRESS AND SUBHASH CHANDRA BOSE" International Journal of Research – Granthaalayah, Vol. 3, No. 3 (2015): 85-88.

1. प्रस्तावना

दिसम्बर 1936, फैजपुर के अधिवेशन में कांग्रेस ने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश किया था। सन् 1938 में सुभाष बोस के नेतृत्व में हरिपुरा में कांग्रेस जनमानस के सम्पर्क में व्यस्त रही। भारत के छः प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों के कार्यों का परीक्षण भी इसी प्रतिमान से किया गया जिन्हे कार्य करते हुए सात माह व्यतीत हो चुके थे। अपने कार्यावधि में उन्होंने राष्ट्रीय योजना समिति का संगठन किया और जवाहरलाल नेहरू को इसका अध्यक्ष बनाया। उनकी नीति बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण की थी। वह ब्रिटेन के साथ समझौत के विरोधी थे और इस विरोध को मजबूत करना चाहते थे। गांधीवादी क्षेत्रों में इससे परेशानी हुई। उनके पक्ष में लोग ब्रिटिश सरकार से समझौता करने की बात सोच रहे थे।

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i3.2015.6315

कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन से दो मास पूर्व जलपाईगुड़ी में भी शरदचन्द्र बोस की अध्यक्षता में बंगाल के प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकार करके कांग्रेस से यह सिफारिश की गई कि वह ब्रिटिश सरकार को भारत के अन्तिम संग्राम का शंख फूक दिया जाय। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंतरिक विद्रोह का यह बाह्य रूप था। उग्रपंथी लोग इस एक मोर्चे पर देश के सारे गरमदलियों को संगठित कर रहे थे। कांग्रेस अध्यक्ष के पद से सुभाष बोस यद्यपि इस संबंध में कोई घोषणा नहीं की थी तथापि यही भावना उनके हृदय में विद्यमान थी और वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। सितम्बर 1938 में म्युनिख समझौता के बाद सुभाष बोस ने खुले तौर पर सारे भारत में राष्ट्रीय संघर्ष के लिये आन्दोलन शुरू कर दिया। वह चाहते थे कि यह आन्दोलन यूरोप के भावी युद्ध के साथ-साथ चलें।

इससे सुभाष बोस और कांग्रेस के गांधीवादी पक्ष में पूरा मतभेद हो गया। सुभाष बोस यह अनुभव करते थे कि कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में केवल एक साल का समय उनके बहुमुखी कार्यक्रमों को क्रियात्मक रूप देने के लिये बहुत कम हैं उन्होंने दूसरी बार अध्यक्ष पद के लिये खड़े होने का विचार किया, यद्यपि यह कांग्रेस की परम्परा के विपरीत था। गांधी जी ने भी इसे पसंद न किया। परन्तु वास्तविकता यह थी कि सुभाष बोस के विचार कार्यकारिणी समिति के शेष सदस्यों के विचारों से मेल न खाते थे। इसी विचार-वैषम्य के कारण कार्यकारिणी समिति की बैठक में नाममात्र के लिये सभापति की तरह भाग लेते थे। इस एक वर्ष के काल में वे अगले वर्ष अध्यक्ष चुने जाने हेतु चुपचाप कार्य करते रहे थे।

अखिल भारतीय कांग्रेस का 52वां अधिवेशन मार्च 1939 में जबलपुर से सात मील दूर नर्मदा तट पर त्रिपुरी के विष्णुदत्त नगर में हुआ। अध्यक्ष के पद के लिये तीन नामों का प्रस्ताव आया। मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा पट्टाभिसीतारमैय्या। सरदार पटेल ने अपना नाम पूर्व में ही वापिस ले लिया था। गांधी जी का विचार था कि मौलाना का नाम त्रिपुरी कांग्रेस के अध्यक्ष के होने से साम्प्रदायिक समस्या का हल करने में मदद मिलेगी। परन्तु मौलाना का अध्यक्ष बनना कार्यकारिणी के अनेक सदस्यों को पसंद नहीं था अंतः मौलाना ने बम्बई में आकर चुपचाप घोषणा की, कि वे अध्यक्ष पद के लिये उम्मीदवार नहीं है। सुभाष बोस तो पहले चुनाव से कतरा रहे थे। क्योकि उन्हें बल्लभभाई पटेल तथा मौलाना आजाद से कुछ मुकाबला होने का डर था और वे हारने का खतरा उठाने को तैयार नहीं थे।

अन्ततः गांधी जी ने डा. पट्टाभिसीतारमैय्या को खड़ा किया था। गांधी जी के समर्थक सुभाष बोस की तीव्रता से बढ़ती राजनीतिक छबि से चितिंत थे। वे चाहते थे कि गांधी जी के वर्चस्व को चुनौती देने वाले किसी भी व्यक्ति की छवि को इतना न बढ़ने दिया जावे कि वह गांधी जी के कलश पुरुषत्व को ललकारने लगे। अतः गांधी जी के समर्थक और आठ प्रदेशों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों के मंत्री गण भी पट्टाभि के पक्ष में अपनी सत्ता का खुलकर प्रयोग कर रहे थे। सुभाष बोस ने पट्टाभिसीतारमैय्या को 95 वोटो से हराकर अध्यक्ष चुने गये। गांधी जी ने कहा पट्टाभि की हार मेरी हार है। और उनके इस वक्तव्य से अर्थ लगाये जाने लगे कि सत्य, अंहिसा, और गांधी के नेतृत्व की हार है। इस अवसर पर आरोप लगाते हुये गांधी जी ने कहा कि कांग्रेस ने एक भ्रष्ट रूप धारण कर लिया है, उसके सदस्य बोगस है। उन्होंने खुली धमकी दी थी कि यदि दक्षिण पंथियों के मन की नहीं हुई तो कांग्रेस से अलग हो सकते हैं।

सुभाष बोस इस विषय में बड़े सतर्क थे और वे नहीं चाहते थे कि अध्यक्ष चुनाव की इस घटना को संसार कांग्रेस में बिखराव का रूप ले। इसीलिये चुनाव के पश्चात ही आपने घोषणा की भारतीय स्वतंत्रता के शत्रुओं को यह नहीं समझना चाहिये कि हममें परस्पर फूट है। हम सब एक ही है। कांग्रेस की शक्ति अविभक्त है। सेठ गोविन्ददास की अध्यक्षता में सुभाष बोस का भूतपूर्व स्वागत हुआ। अधिवेशन के दौरान सुभाष बोस ज्वर से पीड़ित थे अतः बावन हाथी पर भव्य रथ में जिसमें सुभाष बोस का चित्र प्रतिष्ठित था, खीच रहे थे। सुभाष बोस को बैठकों में लाने के लिये स्ट्रेचर पर लाना पड़ा था। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में मौलाना आजाद ने अध्यक्षीय भाषण तथा गोविन्ददास ने स्वागत भाषण पढ़ा। इस अधिवेशन में 3319 प्रतिनिधियों के स्थान पर 2285 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सुभाष बोस अंग्रेजी में भाषण उनके अग्रज शरतचन्द्र बोस ने तथा हिन्दी अनुवाद आचार्य नरेन्द्र देव ने प्रस्तुत किया। जबलपुर यात्रा प्रवास में उनकी माता श्रीमती प्रभावती तथा कनिष्ठ भ्राता डा. सुनील बोस भी थे।

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i3.2015.6315

राजनैतिक दृष्टि से देखे तो त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन पूर्णरूपेण असफल रहा। स्वयं सुभाषचन्द्र बोस लिखते हैं कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में मैने ब्रिटेन के साथ कांग्रेस के किसी समझौते के प्रति विरोध को युद्ध करने का पूरा-पूरा प्रयास किया। इससे गांधीवादियों में जो ब्रिटिश सरकार के बीच काफी चैड़ी मध्य दरार थी यद्यपि वह जनता को दिखाई नहीं देती थी। परिणामस्वरूप जनवरी 1939 के अध्यक्षीय चुनाव में बोस का गांधीवादियों तथा नेहरू ने तीव्र विरोध किया फिर भी वह पर्याप्त मतो से विजयी रहे। सन् 1923-24 के पश्चात पहला अवसर था कि महात्मा गांधी को सार्वजनिक पराजय का समाना करना पड़ा। इस चुनाव में यह प्रदर्शित कर दिया कि गांधी और नेहरू दोनों के खुले विरोध में बोस का सारे देश में कितना विस्तृत प्रभावशाली अनुगमन था।

मानवता के सभी सिद्धान्तों की उपेक्षा करके उस हालत में भी विरोधी सदयों द्वारा सुभाष बोस पर जम कर प्रहार किया। उनके बारह त्यागपत्र साथियों में से एक पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने एक प्रस्ताव रखा जिसमें कहा गया कि आगामी वर्ष में विकट परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती है तथा ऐसे संकट के समय केवल गांधी जी ही कांग्रेस व देश को विजयपथ पर ले जा सकते है.....और इसीलिये कमेटी अध्यक्ष से अनुरोध करती है कि कार्य समिति का चुनाव गांधी जी की इच्छानुसार करें। अभी यह परम्परा थी कि कार्य समिति के सदस्यों का चुनाव अध्यक्ष स्वयं करता था और यह उसका अधिकार भी था। इस बार श्री पंत ने यह अधिकार अध्यक्ष से छीन कर गांधीजी को दे दिया। सुभाष बोस के ऊपर कई क्षेत्रों से दवाव पड़ रहा था कि वे त्याग पत्र दे और वे इसके लिये सहमत नहीं हो पा रहे थे उन्होने गांधी जी को पत्र लिखा था मेरे त्यागपत्र से कांग्रेस की राजनीति में नया मोड़ आ जायेगा जिसका में अन्त करना चाहता हूँ। यदि हम अलग हो गये तो कुछ दिनों के लिये कांग्रेस कमजोर पड़ जावेगी और इसका लाभ अंग्रेज शासन को मिलेगा। इस सर्वनाश से कांग्रेस को बचाना आपके हाथ में है।

सुभाष बोस के अध्यक्ष चुने जाने पर महाकौशल के अनेक पत्रों ने उनकी विजय का स्वागत किया था। कई पत्रों ने मि. बोस की जातीय चालाकी भी बताई। 'हितवाद' ने लिखा है कि सुभाष बोस की जीत ब्रिटिश सरकार के लिये एक चुनौती थी ताकि हिन्दुस्तानियों के लिये उनके रवैया में सुधार आवे। अखबारों में प्रकाशित दुबारा चुनाव को महात्मा गांधी ने आश्चर्यजनक एवं दुखदायी बताया परन्तु कुछ अखबारों ने इसे चुनौती तथा धमकी के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें सामूहिक हड़ताल वामपंथियों तथा राष्ट्रवादियों के बीच होगा। अखबारों में प्रकाशित खबरों का उत्तर देते हुये मि. बोस ने बड़े नपे तुले अंदाज में दिया ताकि कांग्रेस को विभाजन से बचाया जावे। वर्किंग कमेटी के सदस्यों द्वारा इस्तीफा और उनकी टिप्पणी को हितवाद ने लिखा कि यह एक योजना के अन्तर्गत ऐसा माहौल बना रहे है ताकि त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में विभाजन हो जाये। इधर 'डेलीन्यूज' पत्र ने वर्किंग कमेटी के सदस्यों के इस्तीफा को सामान्य हादसा बताया। साप्ताहिक शुभचिंतक ने विचारोतेजक टिप्पणी किसी की जय किसी की पराजय लिखी, जिसमें सुभाष बोस का राष्ट्रपति चुना देश के लिये इतना हानिकारक समझा जाने लगा? पता नहीं महात्मा जी ने चुनाव के पूर्व क्यों मौनावलम्बन किया और सत्य पर प्रकाश डालने वाला वकतव्य क्यों नही दिया? यदि वे ऐसा करते तो क्या यह संभव था कि देश अपने देवता की पुकार का उल्लपंन कर देता।

इस प्रकार राजनैतिक दृष्टि से देखे तो त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के असफलता का कारण मुख्यता गांधीवादियों द्वारा किये जाने वाला सुभाष का विरोध था। सुभाष बोस के अध्यक्ष चुने जाते ही तत्काल कार्यकारिणी ने त्यागपत्र दे दिया। यहां तक कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अधिवेशन में प्रथम दिन में लोग मंच पर न बैठ कर मंच के नीच बैठे और मंच पर तब आये, जब बोस ने उनसे मंच पर बैठने की अपील की दूसरा कारण, इस अधिवेशन में गांधीजी की अनुपस्थिति थी जिसने इसे शोभाहीन कर दिया वे अधिवेशन के समय राजकोट के शासन के विरूद्ध उपवास कर हे थे। तीसरा कारण सुभाष बोस की अस्वस्थता थी वे मुखर अधिवेशन में बहुत कम भाग ले सके।

इस तरह मतभेद और कटुता का उग्र रूप धारण कर लिया। गांधी और सुभाष के पत्र व्यवहार से भी गतिरोध को दूर करने का कोई रास्ता नहीं निकला। सुभाष बोस ने अनुभव किया कि गांधी गुट उनके नेतृत्व का अनुगमन करने को तैयार नही है और वे स्वयं कठपुतली अध्यक्ष बने रहने को तैयार नहीं। उन्होंने 10 अप्रैल 1939 को कांग्रेस की अध्यक्षता से इस्तीफा दे दिया और 'फारवर्ड

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v3.i3.2015.6315

ब्लाक' के नाम से कांग्रेस के अन्दर उग्र और प्रगतिशील दल बनाना शुरू कर दिया। दूसरी ओर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। जबलपुर जिले में बोस का बहुत प्रभाव था। जब वे 4 जुलाई 1939 को जबलपुर आये तो उनकी सभा में 15,000 लोग थे। इस सभा में बोस ने फारवर्ड ब्लाक के उद्देश्यों की व्याख्या करते हुये कहा था कि इसका निर्माण वामपंथियों, कम्युनिस्टों एवं समाजवादियों को संगठित करने तथा देश की स्वतंत्रता के उद्देश्य से किया जा रहा था। तथा जबलपुर में एक कमेटी गठित की गई जो महाकौशल में फारवर्ड ब्लाक का गठन करें।

संदर्भ ग्रन्थ

[1] सुभाषचन्द्र बोस, द इंडियन स्ट्रगल, पृ. 331
[2] आनंद विद्यालंकार, दिल्ली चलो, पृ. 91
[3] ताराचन्द, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग-4. 1. 260.
[4] जे. वी. कृपलानी, गांधी हिज लाइफ एंड थाट, पृ. 177-178
[5] पं. डी. पी. मिश्र के संस्मरण, म. प्र. संदेश, 15 अगस्त 1987, पृ. व-6
[6] आनंद विद्यालंकार, दिल्ली चलो, पृ. 12
[7] रामगोपाल, भारतीय राजनीति, पृ. 389
[8] आनंद विद्यालंकर, दिल्ली चलो, पृ. 10
[9] आर. सी. मजूमदार, स्ट्रगल फार फीडम, पृ. 567-69
[10] आजादी के अग्रदूत, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पृ. 28
[11] अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, पृ. 649
[12] द इंडियन ऐन्यूअल रजिस्टर 1939, खंड एक पृ. 332
[13] श्री कृष्ण सरल, कालजयी सुभाष, पृ. 242
[14] फोर्ट नाइटली रिपोर्ट, होम पोलिटिकल फाईल न. 18/2/139.
[15] वहीं
[16] साप्ताहिक शुभचिंतक, जबलपुर, 6 फरवरी 1939 5. 3
[17] सेठ गोविन्ददास, आत्म निरीक्षण पृ. 408
[18] डी. जी. तेन्ट्रलकर, महात्मा लाइफ ऑफ मोहनदास कर्मचन्द गाँधी, पृ. 64
[19] सुभाष चन्द्र बोस, द इंडियन स्ट्रगल, पृ. 330
[20] प्रा. मुकुट बिहारी लाल, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, भाग-दो, पृ. 525
[21] होम पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट फाइल नं. 18.2.39
[22] हाम पोलिटिकल फाइल क. 18 जुलाई. 1939
[23] वहीं क. 188.39 अगस्त 1939